International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.649 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 1, January 2020 |

महिलाओ को शिक्षा द्वारा सशक्तिकरण (बरेली की हिंदू महिलाओं के संदर्भ में)

Reshu Sharma

Research Scholar, MJPRU, Bareilly, India

सार

शिक्षा के द्वारा एक महिला असहाय व अबला से सषक्त और सबला बनती है। महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य है महिलाओं में छिपी हुई उन शक्तियों, गुणों तथा प्रतिभाओं को विकसित करना, जिनको व्यवहार में लाकर व अपने विकास की ओर स्वयं कदम बढ़ा सके यह कार्य केवल शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है ।

परिचय

प्रत्येक विकसित समाज के निर्माण में स्त्री एवं पुरूष दोनों की सहभागिता आवश्यक है। भावी पीढ़ी के रूप में व्यक्ति से लेकर परिवार, समाज तथा राष्ट्र तक के चहुँमुखी विकास की जिम्मेदारी में पुरुषों के साथ स्त्रियों की अपेक्षाकृत अधिक भागीदारी है। इस भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए ही परिवार की धुरी, महिला का सशक्तीकरण जरूरी है और सशक्तीकरण के लिए शिक्षा।[1,2]

बरेली की हिंदू महिलाओं के संदर्भ में शिक्षा आर्थिक और सामाजिक सशक्तीकरण के लिए पहला और मूलभूत साधन है। शिक्षा ही वह उपकरण है जिससे महिला समाज में अपनी सशक्त, समान व उपयोगी भूमिका दर्ज करा सकती है। दुनिया के जो भी देश आज समृद्ध और शक्तिशाली हैं, वे शिक्षा के बल पर ही आगे बढ़े हैं। इसलिए आज समाज की आधी आबादी अर्थात महिलाएं जो कि विकास की मुख्य धारा से बाहर है, उन्हे शिक्षित बनाना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। इस संदर्भ में राधाकृष्णन आयोग ने कहा है- " स्त्रियों के शिक्षित हुए बिना किसी समाज के लोग शिक्षित नहीं हो सकते।

यदि सामान्य शिक्षा स्त्रियों या पुरूषों मे से किसी एक को देने की विवशता हो, तो यह अवसर स्त्रियों को ही दिया जाना चाहिए, क्योकि ऐसा होने पर निश्चित रूप से वह शिक्षा उनके द्वारा अगली पीढ़ी तक पहुँच जाएगी।" इसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह बात स्वीकार की गई है कि महिला शिक्षा का महत्व न केवल समानता के लिए, बल्कि सामाजिक विकास की प्रक्रिया को तेज करने के लिए भी जरूरी है।

प्रत्येक विकसित समाज के निर्माण में स्त्री एवं पुरूष दोनों की सहभागिता आवश्यक है। भावी पीढ़ी के रूप में व्यक्ति से लेकर परिवार, समाज तथा राष्ट्र तक के चहुँमुखी विकास की जिम्मेदारी में पुरुषों के साथ स्त्रियों की अपेक्षाकृत अधिक भागीदारी है। इस भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए ही परिवार की धुरी, महिला का सशक्तीकरण जरूरी है और सशक्तीकरण के लिए शिक्षा।[3,4]

शिक्षा आर्थिक और सामाजिक सशक्तीकरण के लिए पहला और मूलभूत साधन है। शिक्षा ही वह उपकरण है जिससे महिला समाज में अपनी सशक्त, समान व उपयोगी भूमिका दर्ज करा सकती है। दुनिया के जो भी देश आज समृद्ध और शक्तिशाली हैं, वे शिक्षा के बल पर ही आगे बढ़े हैं। इसलिए आज समाज की आधी आबादी अर्थात महिलाएं जो कि विकास की मुख्य धारा से बाहर है, उन्हे शिक्षित बनाना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। इस संदर्भ में राधाकृष्णन आयोग ने कहा है- " स्त्रियों के शिक्षित हुए बिना किसी समाज के लोग शिक्षित नहीं हो सकते। यदि सामान्य शिक्षा स्त्रियों या पुरूषों मे से किसी एक को देने की विवशता हो, तो यह अवसर स्त्रियों को ही दिया जाना चाहिए, क्योकि ऐसा होने पर निश्चित रूप से वह शिक्षा उनके द्वारा अगली पीढ़ी तक पहुँच जाएगी।' ' इसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह बात स्वीकार की गई है कि महिला शिक्षा का महत्व न केवल समानता के लिए, बल्कि सामाजिक विकास की प्रक्रिया को तेज करने के लिए भी जरूरी है।[7,8]

स्वतंत्रता के बाद सरकार, महिला संगठनों ,महिला आयोगों आदि के प्रयासो से महिलाओं के लिए विकास के द्वार खुले, उनमें शिक्षा का प्रसार बढ़ा जिससे उनमें जागृति आई, आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ परिणामस्वरूप वे प्रगतिपथ पर आगे बढ़ी। आज महिलाएं राजनीति, समाजसुधार, शिक्षा, पत्रकारिता, साहित्य, विज्ञान, उद्योग, व्यावसायिक प्रबन्धन, शासन-प्रशासन, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, पुलिस, सेना, कला, संगीत, खेलकूद आदि क्षेत्रों में पुरूषो के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं । एक ओर यह परिदृश्य अत्यधिक उत्साहवर्धक है परंतु वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि आज भी शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की

स्थिति संतोषजनक नहीं है। पूरी दुनिया में स्कूल न जाने वाले 121 मिलियन बच्चों में 65 प्रतिशत लड़किया है। दुनिया के 875 मिलियन निरक्षर वयस्कों में दो तिहाई महिलाएं हैं। इसी प्रकार 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में महिला साक्षरता दर 53.67 प्रतिशत है जिसमें नगरीय क्षेत्र की महिला साक्षरता 72.99 प्रतिशत तथा ग्रामीण क्षेत्र की महिला साक्षरता 46.58 प्रतिशत है अर्थात भारत में लगभग 50 प्रतिशत महिलाएं अभी तक शिक्षा से वंचित हैं। इसी प्रकार प्राथमिक स्तर पर प्रवेश लेने वाली बालिकाओं में से 24.82 प्रतिशत कक्षा 5 तक की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाती और उन्हे विद्यालय छोड़ना पड़ता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर 50.76 प्रतिशत बालिकाओं को बीच में ही विद्यालय छोड़ कर घरेलू कार्यों में संलग्न होना पड़ता है। स्कूल का दूर होना, यातायात की अनुपलब्धता, घरेलू काम, छोटे भाई-बहनों की देखरेख, आर्थिक व विभिन्न सामाजिक समस्यायें आदि कुछ ऐसे कारण हैं जो कि बालिका शिक्षा की राह में बाधा उत्पन्न करते हैं।[5,6]

बरेली की हिंदू महिलाओं के संदर्भ में आज बालिका शिक्षा का प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों में करने की महती आवश्यकता है। सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से इस दिशा में निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। देश की विकासशीलता के परिवेश में विचार करना आवश्यक है कि महिलाओं की शिक्षा किस प्रकार की हो? महिलाओं को मात्र साक्षर न बनाया जाए बल्कि उन्हें ऐसी व्यावसायिक शिक्षा देनी चाहिए जो उन्हे अपने पैरों पर खड़े होने में मददगार सिद्ध हो। यदि महिलाएं शिक्षित होकर आत्मनिर्भर हों सके तो उनको स्वयं का महत्व समझते देर नहीं लगेगी तथा धीरे-धीरे दूसरो की नजरों में भी उनका स्थान महत्वपूर्ण हो जाएगा। शिक्षित, आत्मनिर्भर, सशक्त महिलाओं के द्वारा ही भारत को एक सशक्त व विकसित देश के रूप में निर्माण कर पाना संभव हो सकेगा।

विचार-विमर्श

1947 तक जब ब्रिटिश सत्ता भारत से वापस ले ली गई थी, तब महिलाओं की आधुनिक शिक्षा लगभग एक सौ पच्चीस वर्ष की थी। इस अवधि की उपलब्धियों का मूल्यांकन दो तरीकों से किया जा सकता है। पहला यह है कि भारत में 1800 में मौजूद स्थितियों की तुलना 1946-47 में हुई। यह पिछड़ा रूप एक महान उपलब्धि दिखाता है - साथ ही मात्रात्मक भी।

इस अवधि के दौरान सभी चरणों में महिलाओं के लिए शैक्षिक अवसर खोले गए थे और उनकी सामाजिक स्थिति को कुछ हद तक गुणात्मक रूप से उठाया गया था, इस शिक्षा ने महिलाओं को खुद के बारे में एक नई जागरूकता पैदा की थी और उनके लिए जीवन का एक बड़ा रास्ता खोल दिया था। स्वतंत्रता के बाद 1951 में महिलाओं की शिक्षा की प्रगति, जनगणना ने दर्ज किया कि केवल 25 प्रतिशत पुरुष और 7 प्रतिशत महिलाएं साक्षर थीं। महिला शिक्षा का पैटर्न आज, लड़कियों के साथ शुरू होता है और मां तक फैली हुई है, जो अब सामाजिक और वयस्क शिक्षा कक्षाओं में भाग ले सकती है। इस बड़ी मांग को पूरा करने के लिए, लड़कियों के स्कूलों और कॉलेजों की संख्या में वृद्धि हुई। स्कूल और कॉलेजों में जाने वाली लड़कियां भी धीरे - धीरे लेकिन लगातार बढ़ती गईं। माता - पिता जो अपने बेटों को शिक्षित करने के लिए उत्सुक हैं और अपनी बेटी को शिक्षा प्रदान करने के लिए भी उत्सुक हैं।

दिल्ली में हुए अधिवेशन में देश भर की 350 मुशायरों में शिक्षाविदों, सामाजिक विशेषज्ञों और सांसदों के साथ जस्टिस सच्चर कमेटी की सिफारिशों को लागू करने का आह्वान किया गया। सच्चर समिति रिपोर्ट 2006 उजागर भारत में मुसलमानों के गंभीर सामाजिक - आर्थिक हाशिये में जारी किया। समिति ने समुदायों के लिए अधिक शैक्षिक सुविधाओं और रोजगार के अवसरों की सिफारिश की थी।

बरेली की हिंदू महिलाओं के संदर्भ में BMA (**भारतीय महिला आंदोलन**) के लिए आग्रह किया सदस्यों उमवउम समुदायों, विशेष रूप से महिलाओं, के लिए योजनाओं, क्रेडिट - सुविधाओं और शिक्षा के अवसर - Generating एक तीव्रता से हाशिए पर सामाजिक समूह में सबसे बुरी तरह प्रभावित। स्वतंत्रता के बाद सामान्य रूप से महिलाओं की शोषण की स्थिति का एहसास हुआ, भारत सरकार द्वारा कई दिशाओं में प्रयास किए गए। कई समिति और आयोगों की स्थापना समय - समय पर हुई। सभी सिफारिशें सामान्य रूप से महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारने के लिए थीं, जो इस प्रकार थीं: [9,10]

1. विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49)
2. माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53)
3. महिला शिक्षा पर राष्ट्रीय समिति (1958-59)
4. श्रीमती। हंसा मेहता समिति (1961-62)
5. भक्तवसालम समिति (1963)
6. कोठारी शिक्षा आयोग (1964-66)
7. शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति (1979)

8. शिक्षा की राष्ट्रीय नीति (1986)
9. महिलाओं पर राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (1988)

महिलाओं की शिक्षा के संबंध में इन समितियों की सिफारिशें नीचे दी गई हैं

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग : (1948-49) की जरूरत है और महिलाओं की शिक्षा के महत्व के बारे में, विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-1949) ठीक ही मनाया गया है : " वहाँ Carmot A . शिक्षित महिलाओं के बिना एक शिक्षित लोग हो तो सामान्य शिक्षा पुरुषों के लिए या महिलाओं तक ही सीमित किया जा सकता था , उस अवसर होना चाहिए महिलाओं को दिया जाता है , क्योंकि यह वह शिक्षा है जो पुरुषों या महिलाओं के रहन - सहन को रोचक और बुद्धिमान बनाती है। यह व्यक्ति को अपने समाज का एक अच्छा , उपयोगी और उत्पादक नागरिक बनाती है। "

परिणाम

महिलाओं पर राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना 1988 को नीतियों और कार्यक्रमों में महिलाओं के मुद्दों की मुख्यधारा के लिए तैयार किया गया था और महिलाओं को पंचायतों से संसद तक निर्णय लेने में कम से कम एक तिहाई हिस्सा दिया गया था। बार - बार गर्भधारण , बच्चे के जन्म , कुपोषण , काम और तनाव , शिक्षा की कमी और आर्थिक पीढ़ी की गतिविधियों की कमी के कारण महिलाओं के विकास में मुख्य कमियां हैं। इस प्रकार , महिला विकास की रणनीति तीन गुना होनी चाहिए , यानी स्वास्थ्य , शिक्षा और रोजगार जो सशक्तीकरण के लिए कदम हैं। सातवीं योजना (1986-91) में सरकार ने निर्णय लिया कि " महिलाओं के लिए पॉलिटेक्निक शिक्षा उनकी विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अधिक ध्यान दिया जाएगा " (सातवीं पंचवर्षीय योजना , पृष्ठ 254) कुछ सुविधाएं।[11,12]

महिलाओं की शिक्षा

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक रचनात्मक कल्पना अत्यधिक मूल्यवान है। यह पुरुषों की शिक्षा उपेक्षित है , यह एक मूर्खता है , लेकिन महिलाओं की शिक्षा की उपेक्षा करना अधिक मूर्खतापूर्ण है। एक अच्छे चरित्र के साथ एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित और शिक्षित मां एक प्रगतिशील राष्ट्र में आवश्यक है। हमें शायद ही यह एहसास हो कि किसी राष्ट्र के चरित्र को महिलाओं की स्थिति , शिक्षा और सामाजिक स्थिति से आंका जाता है। किसी देश की प्रगति को उस देश की महिलाओं की प्रगति से मापा जाता है। सबसे बुरा यह है कि जो लोग इसे महसूस करते हैं , वे देश को इस लक्ष्य तक पहुंचने में मदद नहीं करते हैं। उनमें जोश और उत्साह की कमी है।

राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली होगी

1. महिलाओं के सशक्तिकरण में एक सकारात्मक हस्तक्षेपवादी भूमिका निभाएंय
2. नए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से नए मूल्यों के विकास में योगदान और विभिन्न पाठ्यक्रमों के भाग के रूप में महिलाओं के अध्ययन को बढ़ावा दिया जाएगा।

इस प्रकार , महिलाओं के लिए शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाना चाहिए। इस संबंध में महिलाओं के साथ कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। उन्हें शिक्षित होने के लिए पुरुषों के समान अवसर होना चाहिए। क्योंकि ष्यदि हम एक प्रबुद्ध और प्रगतिशील समाज की इच्छा रखते हैं , तो यह कहे बिना कि पुरुषों और महिलाओं दोनों को शिक्षा का सही प्रकार से पालन करना चाहिए।[1,2]

बरेली की हिंदू महिलाओं के संदर्भ में एक ही मुद्दे पर शोध की कमी मुझे मजबूर करती है , इस विषय को नजरअंदाज करने के लिए नहीं क्योंकि जांच सीधे उत्थान विकास की ओर ले जाती है और आखिरकार जनता की आबादी का सशक्तीकरण अज्ञानता के पीछे बना रहता है और अनजाने में उनकी उन्नति कभी संभव नहीं होगी। और इसे कभी भी किसी विशेष समुदाय का नुकसान नहीं माना जाना चाहिए बल्कि इसे समाज के एक बड़े नुकसान के रूप में लिया जाना चाहिए। देश और संपूर्ण राष्ट्र जो प्रभाव डालते हैं वे न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय भी होंगे। महिलाओं की शैक्षिक स्थिति की लापरवाही के कारण इस तरह के नुकसान और आपदा के पीछे मजबूत भावना , शैक्षिक को उजागर करने की प्रेरणा के पीछे एकमात्र कारण है उत्तर प्रदेश में महिलाओं की हालत।[10,11]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.649 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 1, January 2020 |

निष्कर्ष

बरेली की हिंदू महिलाओं के संदर्भ में महिला सशक्तिकरण में शिक्षा का योगदान

1. कौशल विकास

शिक्षा के माध्यम से महिलाएं अपनी नेतृत्व क्षमता संचार और कौशल को निखारती हैं। साथ ही वित्तीय प्रबंधन, समस्या समाधान, निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत करने में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के माध्यम से महिलाएं पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त करने में सक्षम हैं।[3,4]

2. आर्थिक सशक्तिकरण

महिला को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने के लिए शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है शिक्षा के माध्यम से युवा अपने स्किल को इंप्रूव कर पाता है शिक्षा के माध्यम से ही वह अपने आपको सशक्त और सक्षम बना पाता है शिक्षा के माध्यम से ही बाहर रोजगार को प्राप्त करता है शिक्षा के माध्यम से वह नए व्यवसाय या अन्य किसी न किसी आर्थिक गतिविधियों में पार्टिसिपेट करता है जिससे महिला आर्थिक रूप से सशक्त और समृद्ध हो पाती है।

3. सामाजिक विकास

महिलाओं में शिक्षा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है अगर सामाजिक विकास के दृष्टिकोण से देखें तो अगर महिला शिक्षित होती हैं तो वह शिक्षा के माध्यम से सहानुभूति सहयोग विविधता संचार और नागरिक भागीदारी को बढ़ावा देने में मदद करती है शिक्षा के माध्यम से एक नारी उच्च पदों पर पदस्थ होती हैं वह सामाजिक गतिविधियों में बढ़ चढ़कर भाग लेती है राजनीतिक गतिविधियों में बढ़ चढ़कर भाग लेती है और विकास को बढ़ावा देने में मदद करती हैं शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके कारण नारी अपने सामाजिक विकास को उच्च स्थान तक पहुंचा पाता है।

4. माता-पिता की शिक्षा

शिक्षित माता-पिता शिक्षा के माध्यम से अपनी क्षमताओं को बढ़ा सकते हैं जिससे वे अपने बच्चों परिवार की आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति को ऊंचा उठा सकते हैं तथा अपने जीवन के मूल्यों को संतुष्ट और सफल बना सकते हैं शिक्षा के माध्यम से महिला अपने जीवन को सकारात्मक पहलू में बेहतर बनाती हैं जिससे वह अच्छे माता-पिता की भूमिका निभा पाती है।

5. अनुसंधान और विकास

शिक्षा के माध्यम से महिलाएं अनुसंधान और प्रौद्योगिकी से संबंधित कौशल में महारत हासिल कर सकती हैं। शिक्षा ही महिलाओं में अनुसंधान और प्रौद्योगिकी करने के लिए इन कौशलों के विकास में सहायक सिद्ध होती है। जिससे महिलाएं रिसर्च और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में आगे बढ़कर काम करती हैं। जो महिला सशक्तिकरण की अनूठी मिसाल पेश करती है। अनुसंधान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं की उन्नति किसी भी देश के आर्थिक विकास, बौद्धिक विकास और समावेशी विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। जिसमें शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

6. राजनीतिक शिक्षा

नारी के जीवन में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है इसके माध्यम सेवा लोकतांत्रिक मूल्यों और सिद्धांतों को समझती है और उसका उपयोग करती हैं जिससे राजनीतिक प्रक्रिया मैं एक जिम्मेदार सरकार को चुनने में मदद करती हैं साथ ही साथ शिक्षित नारी राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेकर राजनीति क्षेत्रों की बागडोर संभालते हैं और वह एक अच्छी सेविका और शासक के रूप में काम करती हैं जिससे राजनीतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलता है।[9,10]

7. वैश्विक शिक्षा

अंतरराष्ट्रीय मूल्य को बढ़ाने में नारी शिक्षा की भूमिका अति आवश्यक है जब तक नारी शिक्षित नहीं होगी तब तक अंतरराष्ट्रीय संस्कृति सहयोग और संचार को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देना मुश्किल होगा जब नारी शिक्षित होती है तो वह अंतरराष्ट्रीय मूल्य को बेहतर ढंग से समझती है और उसको उपयोग करती हैं वैश्विक शिक्षा के माध्यम से नारी अपने कौशल का विकास करती है रोजगार प्राप्त करती है और वैश्विक चिंताओं को दूर करने में सहयोग करती हैं विदेश तब तक आर्थिक समृद्धि नहीं बन सकता है जब तक उस देश की नारी शिक्षित ना हो।

8. व्यावसायिक शिक्षा

आज के आधुनिक विश्व में शिक्षा बिना शिक्षा के किसी भी छात्र के लिए एक हथियार की तरह काम करती है चाहे पुरुष हो या महिला रोजगार प्राप्त नहीं कर सकता है। लेकिन शिक्षा के माध्यम से वह विभिन्न क्षेत्रों में अपना करियर बना सकता है। यानी शिक्षा के माध्यम से महिलाएं अपने बौद्धिक विकास के साथ-साथ कौशल विकास के लिए भी प्रयास करती हैं। और शिक्षा महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।[4,5]

9. आजीवन सीखना

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ क्षेत्रीय सामाजिक राज्य स्तरीय देसी अंतर्राष्ट्रीय विकास में सहयोग करता है शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति पूरे जीवन भर सीखते जाते हैं और अपने व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है जिससे लोगों को अपने बदलते परिवेश में समायोजित करने की नई संभावनाओं को पैदा करने की सुविधा प्राप्त होती है जब नारी शिक्षित होती है तो वह जीवन भर अपने शिक्षा और अनुभव के माध्यम से अपने जीवन को विकसित और बेहतर बनाने के लिए लगातार प्रयास करती हैं वह अपने साथ-साथ परिवार समाज देश को समृद्ध बनाने में सहायता करती हैं।

10. सांस्कृतिक विरासत संरक्षण

नारी की शिक्षा से सांस्कृतिक विरासत संरक्षण प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है जब नारी शिक्षित होती हैं तो अपनी शिक्षा के माध्यम से अपनी संस्कृति और अपनी परंपराओं को अच्छी तरह से जान पाते हैं और उन संस्कृति और परंपराओं का अच्छे से निर्वाह करती हैं वह अपनी संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित रखने के लिए अपने स्तर में प्रयास करती हैं अपनी भावनाओं को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़े रखती हैं नारी जब शिक्षित होती है तो वह अपनी संस्कृति और परंपराओं को पहचान और सम्मान देती है जिससे सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और वृद्धि होता है।

11. नागरिक शिक्षा

नारी में शिक्षा एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका अदा करती है जब नारी शिक्षित होती है तो है एक जिम्मेदार नागरिक की तरह सरकार की योजनाओं का लाभ उठा पाते हैं और अपनी बातों को सरकार तक पहुंचाती है जब नारी शिक्षित होती हैं तो वह अपने आसपास के समाज को जोड़ने में अपनी शिक्षा का उपयोग करती हैं जिससे नागरिक जुड़ा विकसित करने में मदद मिलती है समुदायों का निर्माण होता है जिम्मेदार नारी शिक्षा के माध्यम से सरकारों से जवाबदेही की मांग के लिए अपने शिक्षा और अनुभवों का उपयोग करती हैं जिससे एक अच्छे राष्ट्र और समाज का निर्माण होता है।[8,9]

12. पर्यावरण शिक्षा

नारी की शिक्षा पर्यावरण संरक्षण संवर्धन के लिए अति आवश्यक होता है जब एक नारी शिक्षित होती है तब आप पर्यावरण के प्रति गंभीर होती हैं वह पर्यावरण की संरक्षण और संवर्धन के लिए अनेक प्रयास करती हैं शिक्षा के माध्यम से नारी में पर्यावरण के प्रति चेतना और स्थिरता जागृत होती हैं जो पर्यावरण को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने में जोड़ देती है तथा पर्यावरण को सुरक्षित रखने में अहम भूमिका निभाती है नारी की शिक्षा पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन के लिए लोगों में चेतना और प्रोत्साहन को जागृत करने में अहम भूमिका निभाती है।[5,6]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.649 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 1, January 2020 |

13. स्वास्थ्य शिक्षा

नारी में शिक्षा के माध्यम से स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता जागृत होता है एक शिक्षित नारी में अच्छी आदतों और अच्छे जीवन शैली को लेकर गंभीरता उत्पन्न होती है और जब शिक्षित नारी अपने स्वास्थ्य को लेकर गंभीर होती है तो आपने स्वस्थ और जीवनशैली को बेहतर बनाने में शिक्षा की मदद लेती हैं जिससे नारी के जीवन में स्वास्थ्य के नकारात्मक परिणाम दूर हो जाते हैं और वह धीरे-धीरे स्वास्थ्य परिणामों में सुधार होते जाते हैं इससे नारी की चिकित्सा व्यय और तनाव कम हो जाता है और नारी एक खुशहाल जीवन जीती है।

14. स्वास्थ्य और कल्याण

शिक्षा एक ऐसा माध्यम होता है जिसके कारण व्यक्ति अपने जीवन का विकास संभव है तब से बेहतर ढंग सीकर पाता है नारी में जब शिक्षा बढ़ती जाती है तो वह पोषण प्रजनन बीमारी स्वास्थ्य के गंभीर परिणाम को रोकने में अपने शिक्षा और अनुभव के साथ साथ डॉक्टरी सलाह और तर्कों के साथ बुद्धि का उपयोग करती हैं जिससे महिला में स्वास्थ्य और पोषण को लेकर सकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं नारी स्वास्थ्य और अपने कल्याण के लिए शिक्षा के माध्यम से अनेक बीमारियों की रोकथाम के लिए प्रयासरत रहती है जो नारी के चिकित्सा व्यय और मानसिक चिंताओं को दूर करने में मदद करती हैं साथ ही साथ वह एक खुशहाल जीवन व्यतीत करती हैं।[7,8]

15. जानकारी प्राप्त करना

शिक्षा एक ऐसा माध्यम होते हैं जिससे किसी भी विषय के बारे में जानकारी प्राप्त करके अपने बौद्धिक क्षमताओं को विकसित किया जा सकता है एक शिक्षित नारी अपने बौद्धिक विकास के लिए शिक्षा प्राप्त करके अपने अधिकारों को बेहतर ढंग से समझ सकती है और उसका उपयोग कर सकते हैं संसाधनों तक पहुंच कर उन संसाधनों का बेहतर ढंग से उपयोग कर सकती हैं अपने व्यक्तित्व विकास को बेहतर बनाने के लिए शिक्षा के माध्यम से एक नारी उपयोग कर सकती है शिक्षा के माध्यम से नारी अपने जरूरतों को पूरा करने के लिए उपयोग कर सकती हैं एक नारी शिक्षा के माध्यम से अपने अध्यात्मिक और भौतिक विकास को बढ़ावा दे सकती हैं वह आर्थिक राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक और अन्य मामलों में भी शिक्षा के माध्यम से सशक्त और समृद्ध हो सकती हैं।[6,7]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. अग्रवाल एस . पी . , अग्रवाल , जे . सी . , " भारत में महिला शिक्षा , नई दिल्ली - 1928-29 ।
2. अग्रवाल , एम .," शिक्षा और आधुनिकीकरण " नई दिल्ली , 1986 ।
3. भटनागर , सुरेश , भारतीय शिक्षा , आज और कल , मेरठ , 1984 ।
4. बर्न एलेन , एम . , " महिला और शिक्षा " , लंदन , 1984 ।
5. घोष , एसके , " वुमन इन चेंजिंग सोसाइटी " । आशीष पब्लिशिंग हाउस , नई दिल्ली , 1985 ।
6. हुसैन , फ्रेड , महिला , नई दिल्ली , 1984 ।
7. मेनन , इंडस्ट्रीज , एम . , ' भारत में महिलाओं की स्थिति , प्रकाशन हाउसिंग नई दिल्ली , 1981
8. कुरैशी , इशरत अली , " अलीगढ़ अतीत और वर्तमान , अलीगढ़ विश्वविद्यालय , अलीगढ़ , 1992 ।
9. रेड्डी , सीआर , " शि क्षित कामकाजी महिलाओं की स्थिति , बी . आर . प्रकाशन निगम , दिल्ली , 1986 ।
10. रॉय , शिबानी , एम . , " उत्तर भारत में महिलाओं की स्थिति " , बीआर प्रकाशन निगम , दिल्ली , 1979 ।
11. रुथ , डब्ल्यूएफएफ , " ब दलती इस्लामी व्यवस्था में महिलाएं , बिमलका पब्लिशिंग हाउस , दिल्ली , 1983 ।
12. सिन्हा , Phupa, " काम महिलाओं के बीच संघर्ष की भूमिका " , जानकी प्रकाशन रत्न , नई दिल्ली , 1987 ।